(1)

B.A. History Hon's, Part-II

Paper: III, Unit: II, Date: 5.10.2020 Letcure No- 5

Lession: मुहम्मद बिन तुगलक का आक्रमण

मध्य-युग के इतिहास में मुहम्मद तुगलक चरित्र एवं उसके कार्य अन्य शासकों की तुल
में विवादस्पद रहे हैं। सभी इतिहासकार व्यक्तिगत दृष्टि से मुहम्मद तुगलक असाधारण
उसका शरीर पुष्ट और शक्तिशाली था। उसने उचित शिक्षा प्राप्त की थी और उसका
काफी विकसित था। उसे अरबी और फारसी भाषा, गणित, नक्षत्र-विज्ञान, भौतिक-शा
तर्क-शास्त्र, दर्शन, चिकित्सा आदि का ज्ञान था। वह एक अच्छा कवि था तथा उपमा
एवं अलंकारों का प्रयोग करता था। वह लिखने और बोलने की कला में परिपूर्ण था।
वह ललित कलाओं और संगीत से प्रेम था। वह एक विद्वान और सुसंस्कृत व्यक्ति
वह निर्धनों की सहायता करता था और प्रत्यः चालीस हजार व्यक्ति शाही भोजना
में भोजन प्राप्त करते थे। उसने अस्पताल बनवाये थे और राज्य की तरफ से दान-द
का पूर्ण प्रबंध था। वह शराब नहीं पीता था और शराब पीने को रोकने के लिए प्रयत्न
किये थे। वह स्त्री-सम्बन्धों में वह बहुत कट्टर था और अनेक अवसरों पर सेना के
साथ स्त्रियों को ले जाने पर प्रतिबंध लगाया था। उसने अपने पिता का हत्या करवा दि
था परन्तु उसने सिक्कों पर अपने पिता का नाम अंकित किया और अपनी माँ का सम्मा
वह एक सैनिक और सेनापति की दृष्टि से योग्य था।

दक्षिण भारत की विजय को पूर्ण करने का श्रेय उसी को था। अ
विद्रोह हुए परन्तु जहाँ-जहाँ सुल्तान गया, उसने विद्रोह को दबाने में सफलता मि
यह विश्वास किया जा सकता है कि आर्थिक संकटों, उत्तरी भारत के अकाल और दक्षिण
भारत के हैजा अथवा प्लेग के कारण उसकी सेना दुर्बल हो गई थी। उसके स
अभियानों की सफलता यह भी सिद्ध करती है कि उसे वफादार और योग्य व्यक्तियों
सेवाएं प्राप्त हुई थी। दिल्ली के सुल्तान में किसी ने भी मुहम्मद तुगलक के बरा
अपने जीवन का सैनिक-अभियानों में व्यतीत नहीं किया। अपने 26 वर्ष के शासन
काल में वह जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल नहीं हुआ। राज्य के आर्थिक हानि की,
जनसाधारण को कष्ट और असंतोष प्रदान किया तथा सुल्तान की प्रतिष्ठा में कमी क

बाह्य दृष्टि से उसकी खुरासन की विजय योजना त्याग दी
गयी, कराजल-आक्रमण के लाभ कम और सैनिक हानि अधिक हुई, बंगाल स्वतंत्र
हो गया, सम्पूर्ण दक्षिणी भारत में स्वतंत्र राज्य स्थापित हो गये और गुजरात त
सिन्ध में उसका प्रभाव अस्थिर हो गया। उसने अपने पिता से प्राप्त एक शक्तिश
राज्य को दुर्बल और छोटा कर दिया यह माना जा सकता है कि तुगलक-वंश का प
उसके समय से ही आरंभ हो गया। मुहम्मद तुगलक परिश्रमी, जनता की भलाई चाह
वाला और समय-समय पर अत्यधिक न्यायप्रिय होते हुए भी शासक की दृष्टि
असफल हुआ। उपर्युक्त बातों पर सहमत होने के कारण मुहम्मद तुगलक का दोमुखी
व्यक्तित्व, चरित्र, व्यवहार और कार्य में विवाद का कारण बन गये। उसके अनुसार (सुल
का उत्तेजक चरित्र, दुराग्रह, व्यवहारिक बुद्धि की कमी, धैर्य की कमी तथा मानव व्यवहार
तथा परिस्थितियों को समझने की क्षमता का अभाव असफलता का मुख्य कारण थी।
फलस्वरूप, सुल्तान संयम खोकर कठोर दण्ड देता था और परिस्थितियों के कारण ह
वह उन्हें त्याग भी देता था। सुल्तान की यह कमी भी थी कि वह अपनी और अपने
अधिकारियों का सहयोग प्राप्त करने में असफल हो जाता था और फिर कुछ दोष
सभी को नीच और बेईमान मान लेता था। अतः अपनी असफलता का मूल कारण
तो वह स्वयं ही था।

इतिहासकार इसामी और बरनी ने सुल्तान पर 'काफिर' होने का आरोप लगाया है परन्तु यह गलत है। सुल्तान दिल्ली के सुल्तानों में अत्यधिक सहिष्णु शासक था। वह सभी धर्मों के विद्वानों का सम्मान करता था। वह सभी सूफी, योगी, और अन्य विभिन्न सम्प्रदायों के संत के सम्पर्क में आया था। अपनी हिन्दू प्रजा के प्रति उसका व्यवहार सहिष्णुतापूर्ण था। नगरकोट पर आक्रमण के अवसर पर उसने ज्वालामुखी देवी के मंदिर को नष्ट नहीं किया। हिन्दुओं को सम्मानित पदों पर नियुक्त किया था। उसने उलेमा-वर्ग को अधिकारों से वंचित किया था और उनके अवसरों पर उसने उन्हें कठोर दण्ड दिये थे। अतः कट्टर मुसलमान और उलेमा वर्ग उससे असंतुष्ट हो गये और गलत आरोप लगाये। सुल्तान को संतुष्ट करने के लिए खलीफा की स्वीकृति लेने और खलीफा के वंशज गियासुद्दीन मुहम्मद का सम्मान करने के लिए बाध्य होना पड़ा। इस्लाम के विरुद्ध कार्य करने वालों को मृत्यु-दंड देता था। वह एक सहिष्णु मुसलमान शासक था। इब्न-बतूता ने लिखा है कि "मुहम्मद तुगलक एक ऐसा व्यक्ति है जो उपहार देने तथा रक्त बहाने में अन्य सभी से अधिक रुचि रखता है। उसके द्वार पर किसी निर्धन को धनवान बनते हुए अथवा जीवित व्यक्ति को मृत्यु के मुख में जाते हुए किसी भी समय देखा जा सकता है।" इतिहासकार बरनी ने लिखा है कि "सुल्तान ने निरपराध मुसलमानों का रक्त इतनी क्रूरता से बहाया कि सर्वदा उसके महल के दरवाजे से बहता हुआ खून की धारा देखा जाता था।"

मुहम्मद तुगलक के एक अन्य विवाद यह है कि 'उसमें विरोधी तत्वों का मिश्रण था या नहीं?' स्मिथ ने लिखा है कि "वह विरोधी तत्वों का मिश्रण था और बाद के समय में जहाँगीर में हुआ।" मुहम्मद तुगलक के कार्यों को देखते हुए जब उसके चरित्र की व्याख्या की जाती है तो यह स्पष्ट होता है कि निःसंदेह उसके चरित्र में विरोधी तत्व थे। "मुहम्मद तुगलक में विरोधी तत्वों का मिश्रण था" अपना ही दृढ़ विश्वास, आदि हृदय और मस्तिष्क के अनेक गुण उसमें ऐसे थे जो उसके चरित्र के कुछ दोषों के पूर्ण विरोधी में दिखाई देते हैं। मध्ययुग में राजमुकुट धारण करने वालों में मुहम्मद तुगलक निस्सन्देह योग्यतम व्यक्ति था। मुस्लिम शासन की स्थापना के पश्चात् दिल्ली के सिंहासन को सुशोभित करने वाले शासकों में वह सर्वाधिक विद्वान और सुसंस्कृत शासक था। शिक्षा, ज्ञान, नैतिक चरित्र, व्यक्तिगत साहस और सैन्य संचालन की दृष्टि से मुहम्मद तुगलक अद्वितीय था। परन्तु एक शासक की दृष्टि से मुहम्मद तुगलक पूर्णतया असफल रहा, इसमें संदेह नहीं किया जा सकता। वह न तो अपने राज्य की सुरक्षा कर सका, न अपनी प्रजा की भलाई और न ही अपनी प्रतिष्ठा की सुरक्षा। यही कारण है कि मुहम्मद तुगलक का स्थान एक योग्य और सफल शासक के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता। उसकी विद्वता, कल्पनाशक्ति, व्यक्तिगत साहस और धार्मिक सहिष्णुता उसकी श्रेष्ठता में थी। इस कारण मुहम्मद तुगलक की श्रेष्ठता उसकी सफलता अथवा असफलताओं के कारण नहीं बल्कि उसकी विद्वता और चरित्र के कुछ विशेष सद्गुणों के कारण है।

□ डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कॉलेज, जयनगर